विचार बिन्दु

चरित्र मनुष्य के अन्दर रहता है, यश उसके बाहर। –अज्ञात

वियतनामियों के जज़्बे को सलाम!

मैं ने गत संपादकीय में वियतनाम के बारे में परिचयात्मक आलेख लिखा था। इस आलेख में मैं एक सप्ताह की वियतनाम यात्रा की समाप्ति पर हुए अनुभव के कुछ पहलुओं से पाठकों को परिचित कराना चाहता हूं। वियतनाम लगभग 100 वर्षों तक 1845 से 1945 तक फ्रेंच का उपनिवेश रहा। यहां फ्रांस के लोगों ने राज किया, इसीलिए, यहाँ के कई महत्वपूर्ण भवनों पर फ्रांसीसी स्थापत्य कला का प्रभाव दिखाई देता है। उन्हें फ्रांस 2 सितंबर 1945 को स्वतंत्रता मिली तो फिर अमेरिका ने दक्षिण वियतनाम पर आधिपत्य जमाना प्रारंभ कर दिया। जब फ्रांस का शासन था तब अमेरिका फ्रांस को हथियार देता रहा। जब इंडो चाइना समझौते के अंतर्गत फ्रांस मने यहां से अपना शासन समाप्त किया तो अमेरिका ने यहां पर पैर जमाने प्रारंभ कर दिए। 1954 में जब यहां पर चुनाव होने लगे तो अमेरिका को लगा कि चीन, रूस, कंबोडिया के साथ ही वियतनाम, थाईलैंड और बर्मा में साम्यवादी सरकारों का गठन हो जाएगा। अमेरिका ऐसा नहीं चाहता था इसलिए साम्यवादी विचारधारा के विस्तार को रोकने के लिए अमेरिका ने वियतनाम के दक्षिणी भाग में अपनी पसंद की कठपुतली सरकार बनवा दी। यह सरकार अमेरिका की इच्छा अनुसार काम करती रही । उसने उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम को अलग कर दिया और दोनों भागों के नागरिकों को एक दूसरे के विरुद्ध कर दिया। 1954 से 1966 तक राष्ट्रपति ने अमरीकी सैनिकों को वियतनाम में आने की अनुमति नहीं दी और सहयोगी राष्ट्रों के सैनिकों के माध्यम से युद्ध करता रहा। इसके पश्चात 1966 में अमेरिकी सैनिकों को वियतनाम में आने की अनुमति मिली।

1954 से लेकर 1975 तक लगातार वियतनाम युद्ध के रूप में वियतनाम के नागरिकों और फौज ने अमेरिका से लोहा लिया। वियतनाम के लोगों का मानना था कि अमेरिका ने उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ कर बहुत बड़ी गलती की क्योंकि वह केवल वियतनाम की सेना के साथ लड़ाई नहीं कर रहा था, बल्कि वियतनाम देश तथा इसके लोगों के विरुद्ध कर रहा था, जिसमें सफलता मिलना असंभव था। यह वियतनाम के लोगों की संघर्षशीलता और एकजुटता का ही परिणाम था कि 20 वर्षों के संघर्ष के बाद भी वियतनाम को परास्त नहीं कर सका और अंततः थक-हार कर 1975 में इस देश को छोड़कर जाना पड़ा।

इसके बाद लगभग 20 वर्षों तक वियतनाम के संबंध सभी पश्चिमी देशों से समाप्त हो गए थे जिसके कारण यह देश बिल्कुल अलग-थलग पड़ गया था। इसका प्रमुख कारण अमेरिका द्वारा वियतनाम के विरुद्ध 'ट्रेड एंबार्गो' या व्यापारिक प्रतिबंध इस देश पर लगाना था। यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति अत्यंत खराब होती गई और अंततः 1995 में सबसे पहले अमेरिका ने यह प्रतिबंध हटाया और धीरे-धीरे पूरे विश्व के साथ वियतनाम के संबंध स्थापित हुए। लगभग 2000 तक यह संबंध सभी देशों के साथ स्थापित हो चुके थे ।

गत 25 वर्षों में जिस प्रकार तेजी से वियतनाम ने प्रगति की है, वह उल्लेखनीय है।आज यहां की प्रति व्यक्ति आय भारत की प्रति व्यक्ति आय से लगभग दोगुनी है। यहां पर गरीबी है और वह दिखाई भी देती है, किंतु कोई भी भिखारी हमें पूरी वियतनाम यात्रा के दौरान नहीं दिखाई दिया। सभी व्यक्ति कोई ना कोई छोटा-मोटा काम करके और पूरे परिश्रम के साथ अपना गुजारा करते हैं।

वियतनाम युद्ध के एक पहलू का उल्लेख करना उपयुक्त होगा। अमेरिकी अत्याचार और आक्रमण से बचने के लिए वियतनामियों ने भूमिगत सुरंगों का निर्माण किया।

अमेरिका के विरुद्ध खतरनाक जहरीले रसायन 'एजेंट ऑरेंज' का उपयोग किया। इससे अनेक लोग मारे गए और आज तीसरी पीढ़ी में में इसके कारण विकलांगता का असर देखा जा रहा है।

वियतनाम सरकार ने प्रभावित लोगों के पुनर्वास और उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबित बनाने के लिए उनके लिए हस्तशिल्प प्रशिक्षण के केंद्र संचालित किए हैं। उनके द्वारा बनाई गई शिल्प की वस्तुएं पर्यटकों को विक्रय की जाती हैं। सरकार का यह कदम जहां इन लोगों में स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करता है वहीं उनके मन में आत्मनिर्भरता का भाव बढ़ाता है।

पर्यटन की दृष्टि से जहां उत्तरी वियतनाम में विदेशी लोगों ने निवेश किया है वहीं सैगोन (नया नाम हो ची मिन्ह) शहर के उत्तरी पश्चिमी भाग में निवेश करने से अभी भी विदेशी कंपनियां कतराती हैं क्यों क्योंकि उन्हें एजेंट ऑरेंज के कारण यहां के पानी के प्रदूषित होने का खतरा अभी भी महसूस होता है।

उत्तरी वियतनाम जहां प्राकृतिक दृष्टि से अधिक समृद्ध है वहीं दक्षिणी वियतनाम ऐतिहासिक दृष्टि से। 1975 में उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम के एकीकरण के बाद हनोई को वियतनाम की राजधानी बनाया गया। हो ची मिन्ह शहर वियतनाम की व्यावसायिक राजधानी कहलाता है। तत्पश्चात सैगोन का नाम बदल कर हो ची मिन्ह रख दिया गया। हो ची मिन्ह वही व्यक्ति हैं जिन्होंने 1945 में वियतनाम को स्वतंत्र घोषित किया और 1969 तक उनके देहांत तक वे इस देश के राष्ट्रपति रहे । अमेरिका के विरुद्ध जब हो ची मिन्ह कम्युनिस्ट राष्ट्रो से अमेरिका के विरुद्ध मदद मांग रहे थे तो वियतनाम के छोटा देश होने के कारण उनकी कोई बात सुनी नहीं जा रही थी। इस कारण उन्होंने पहले माओत्से तुंग जो कि चीन के राष्ट्रपति थे, उनसे बात की और उनके साथ वह रूस गए जहां से उन्हें कई प्रकार की सहायता मिली।

वियतनाम ने किस प्रकार का कष्ट देखा और अमेरिका ने किस प्रकार से इसको तहस-नहस किया इसका आभास हमें तब हुआ जब हमने हो ची मिन्ह में स्थित 'वार मेमोरियल' को देखा। युद्ध में किस प्रकार से वियतनाम ने गोरिल्ला पद्धित से संघर्ष किया, यह देखने काबिल है। यह सीखने काबिल है कि कैसे वियतनाम ने संघर्ष के स्थलों को पर्यटन के आकर्षण का केंद्र बनाया है।

एक विशेष बात कूची की भूमिगत सुरंगों के बारे में लिखना उचित होगा। ये सुरंगें हो ची मिन्ह शहर से लगभग 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित हैं। इनकी कुल लंबाई 254 किलोमीटर है। ये अत्यंत संकरी हैं। कई स्थानों पर तो इनकी ऊंचाई केवल 3 फीट और चौड़ाई इतनी कि एक व्यक्ति मुश्किल से मुड़ सके। कई वियतनामियों ने बहुत समय इन्हीं सुरंगों में बिताया। सुरंग में हवा के आवागमन की व्यवस्था भी की गई। बारिश के समय कीचड़ में इनके पांव के निशान के आधार पर अमेरिकी सैनिक इन तक न पहुंच पाएं इसके लिए उन्होंने विशेष तरह के सैंडल बनाए ताकि अमेरिकियों को भ्रमित किया जा सके।

वियतनाम यात्रा के दौरान हमने अनुभव किया कि प्रत्येक पर्यटन स्थल पर शौचालय की बहुत अच्छी व्यवस्था है जो निरंतर साफ रखे जाते हैं . जिनमें नल में और फ्लश के लिए पानी की कभी कोई कमी नहीं आने दी जाती है। हाथ को सुखाने वाला हेयर ड्रायर सदैव काम करता है। भारत में ये सब उपकरण बनाए तो जाते हैं किंतु वे सब संधारण के अभाव में खराब होकर अनुपयोगी हो जाते हैं। हमने भारत में आते ही अहमदाबाद ट्रेन में सफर करते समय इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। शौचालय में तो टूंटी नहीं थी और वाश बेसिन में खराब सी प्लास्टिक की टूंटी लगी थी। इस क्षेत्र में भारत को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि प्रकृति ने भारत को संभवतया विश्व में सबसे अधिक समृद्ध किया है ।

पूरे उत्साह के साथ यहां के गाइड अपने देश की संस्कृति और अपने पर्यटन स्थलों के बारे में रुचि से समझाते हैं। राष्ट्र के प्रति उनका प्रेम और समर्पण अनुकरणीय है। तेजी से प्रगति का एक कारण, विशेषकर पर्यटन के क्षेत्र में, संभवतया इनकी यही राष्ट्रभक्ति और परिश्रम की भावना है। यही एक कारण था कि अमेरिका के साथ लंबे युद्ध में वियतनाम ने अत्यंत ही कठिनाई का समय देखा और केवल एकजुट होने के कारण ही इन्होंने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश का डट कर 20 वर्षों तक मुकाबला किया ।

वियतनाम ने किस प्रकार का कष्ट देखा और अमेरिका ने किस प्रकार से इसको तहस नहस किया इसका आभास हमें तब हुआ जब हमने हो ची मिन्ह में स्थित 'वार मेमोरियल' को देखा। युद्ध में किस प्रकार से वियतनाम ने गोरिल्ला पद्धित से संघर्ष किया, यह देखने काबिल है। यह सीखने काबिल है कि कैसे वियतनाम ने संघर्ष के स्थलों को पर्यटन के आकर्षण का केंद्र बनाया है। यह प्रेरणास्पद है कि कू ची शहर के पास ही लगभग 254 किलोमीटर की भूमिगत सुरंगें बनी हुई हैं जिनको पर्यटन स्थल के रूप में सरकार ने सरकार विकसित किया है । पर्यटक यह देख सकते हैं कि कैसे सुरंगों में लोग रहते थे और कैसे इनके माध्यम से स्थानीय बाँस की नुकीली कीलों से अमेरिकी सैनिकों को ट्रैप करके घायल कर दिया जाता था। हम में से कुछ लोगों ने सुरंग को अंदर से देखा। यह आश्चर्यजनक लगा कि इन्हीं सुरंगों में मीटिंग कक्ष, रसोई, बेडरुम के साथ ही शस्त्रागार की भी व्यवस्था थी।

दानांग प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया गया है। यहां बाना हिल्स पर दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी रोप वे बनाई गई है। यहां का गोल्डन ब्रिज वियतनाम की पहचान बन चुका है। इसके अलावा यहां एक पीपुल ब्रिज भी है जो लोगों ने पिग्गी बैंक के माध्यम से की गई छोटी छोटी बचत से बनाया गया है। यहां पर बांस से बनी गोल छोटी नावें भी चलती हैं जो दुनिया में केवल यहीं देखी जा सकती हैं।

हालोंग बे में जहाज पर क्रूज़ पांच सितारा सुविधा युक्त था। इस पर यात्रा करते हुए आप विभिन्न पहाड़ियों के बीच पानी पर गुजरते हुए प्रकृति की अनुपम सुंदरता का अनुभव कर सकते हैं। ऐसे सैकड़ों क्रूज़ पर्यटकों के लिए उपलब्ध हैं। इन पर की जाने वाली रोशनी रात्रि को अत्यंत भव्य और आकर्षक लगती है।

हो ची मिन्ह शहर में रियूनिफीकेशन स्मारक के रूप में इंडिपेंडेंस पैलेस को पर्यटन स्थल बनाया गया है। दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रपति के आवास को बम गिराकर ध्वस्त कर दिया गया । 1975 में स्थानीय स्थापत्य कला के आधार पर इसका पुनर्निर्माण किया गया। 30 अप्रैल को "रि यूनिफिकेशन डे" के रूप में मनाया जाता है।

लगभग 200 वर्ष पहले तक वियतनाम में शिक्षा की बहुत कमी थी और उनकी अपनी कोई लिखित लिपि भी नहीं थी। उनकी बोली को सुनकर फ्रांसीसियों ने लैटिन लिपि का वियतनामी भाषा का आधार बनाया। 1976 के बाद शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया और सभी लोगों को शिक्षित बनाने के सारे सघन प्रयास किए गए।

मेरे विचार से सभी भारतीयों को अवसर निकाल कर वियतनाम की यात्रा करनी चाहिए और वहां के लोगों की देशभक्ति की भावना और अनुशासन से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमारे लिए यह बहुत अच्छे अनुभव वाली रही।

अंत में वियतनाम के लोगों को सलाम!

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

संघ की शताब्दी : व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की यात्रा

भजनलाल शर्मा

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के निर्णायक दौर में एक ऐसा विचार अंकुरित हुआ, जिसने राष्ट्रजीवन की दिशा बदल दी। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और उनके पांच साथियों ने अनुभव किया कि विदेशी दासता का पूर्ण समाधान केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि समाज के चरित्र निर्माण और संगठन क्षमता में निहित है। इसी विचार की परिणति 1925 की विजयादशमी को नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना के रूप में हुई। यह बीज आज विश्व भर में फैले विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है।

डॉ. हेडगेवार बचपन से मातृभूमि के प्रति अद्भुत समर्पण रखते थे। कोलकाता में मेडिकल शिक्षा के दौरान उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के सशस्त्र क्रांति से लेकर सत्याग्रह तक अनेक स्वरूपों को निकट से देखा। उनके लिए यह स्पष्ट था कि भारत की दासता का मूल कारण सामाजिक विखंडन, संकीर्ण पहचान और सांस्कृतिक हीनता है। इस कमजोरी को दूर करने के उद्देश्य से उन्होंने शाखा पद्धति विकसित की। इस पद्धति में अनुशासन, व्यायाम, गीत, प्रार्थना और राष्ट्र भावना के संस्कार जीवनपर्यंत व्यक्ति का मार्गदर्शन करते हैं।

द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर 'गुरुजी' ने संघ को वैचारिक ऊंचाई प्रदान की। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक महान सांस्कृतिक राष्ट्र है और इसका ध्येय मानवता को सार्वभौमिक सद्भाव की दिशा प्रदान करना है। आगे श्रद्धेय देवरस जी, रज्जू भैया, सुदर्शन जी और वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने समय की चुनौतियों के अनुरूप संघ के संगठन और विचार यात्रा को आगे बढ़ाया। आज संघ सामाजिक समरसता, महिला सहभागिता, परिवार व्यवस्था और नागरिक कर्तव्यों जैसे विषयों पर विशेष बल दे रहा है।

वर्ष 1926 से प्रारंभ हुई शाखा परंपरा अब गांव-गांव, नगर-नगर तक फैल चुकी है। लगभग 85 हजार दैनिक, साप्ताहिक और मासिक शाखाओं में 50 लाख से अधिक स्वयंसेवक नियमित सहभागिता करते हैं। भारत के अलावा भी 40 से अधिक देशों में यह संस्कारित संगठन शक्ति सक्रिय है।

मुझे स्वयं बचपन में संघ की शाखा में जाने का सौभाग्य मिला। भरतपुर जिले में मेरे रिश्ते में दादाजी संघ का कार्य संभालते थे और उनकी प्रेरणा से ही मुझे सेवा, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का संस्कार मिला। शाखा वास्तव में निस्वार्थ सेवा, एकात्मकता और समर्पण का विद्यालय है।

संघ की यह सौ वर्षीय यात्रा सरल नहीं रही। 1948, 1975 और 1992 में प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। गांधीजी की हत्या के बाद गंभीर आरोप लगाए गए, आपातकाल में संघ को कुचलने के प्रयास हुए, उपहास और उपेक्षाएं झेलनी पड़ीं। इसके बावजूद संघ हर बार और दृढ़ होकर समाज-सेवा में जुटा और तपकर कुंदन की तरह चमकता रहा।

भारत-चीन युद्ध 1962 के समय संघ ने सीमांत क्षेत्रों तक रसद पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसके बाद 1963 की गणतंत्र दिवस परेड में स्वयं नेहरू ने संघ को आमंत्रित किया।भारत-पाक युद्ध 1965 के दौरान दिल्ली में यातायात व्यवस्था संभालने में स्वयंसेवक अग्रणी रहे।

आपदाओं, चक्रवात, भूकंप, बाढ़, महामारी आदि में संघ के स्वयंसेवक सदैव सबसे पहले प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे। संघ के अनुषांगिक संगठन जैसे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिंदू परिषद, सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, भारतीय किसान संघ और विद्या भारती शिक्षा, श्रमिक कल्याण, जनजातीय विकास, ग्रामीण सुधार और सांस्कृतिक जागरण में अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन ने संघ को संस्कृति-संकल्प की विराट ऊर्जा के रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत किया।

आज संघ केवल एक संगठन नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का एक व्यापक, जीवंत आंदोलन है। शताब्दी वर्ष में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत द्वारा दिए गए पंच परिवर्तन (नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण-संवेदनशील जीवनशैली, सामाजिक समरसता, पारिवारिक मूल्य और स्वबोध) न केवल राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा संघ के शताब्दी समारोह पर विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के जारी करना इस संगठन की राष्ट्रीय भूमिका का सम्मान है। 100 रुपये के सिक्के पर उकेरा गया बोध वाक्य-'राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम' संघ की आत्मा का सटीक सार है।

संघ एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आंदोलन है। इसका उद्देश्य समाज को संगठित कर सज्जन शक्ति को सशक्त बनाना, और राष्ट्र जीवन में उसका नेतृत्व स्थापित करना है। आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, हिंसक संघर्षों और वैचारिक विभाजन से जूझ रही है, तब भारत की आध्यात्मिक परंपरा और सह-अस्तित्व की संस्कृति विश्व को प्रकाश दे सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि हर भारतीय राष्ट्रीय कर्तव्य को समझे और आदर्श समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाए।

संघ की शताब्दी यह स्पष्ट संदेश देती है कि राष्ट्रनिर्माण सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यक्ति निर्माण, संगठित समाज और सुदृढ़ सांस्कृतिक आधार से होता है। संघ का संकल्प है कि भारत न केवल आत्मनिर्भर बने, बल्कि विश्व को भी शांति, सहयोग और सद्भाव की राह दिखाए।

–भजनलाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

राजस्थान में RAS भर्ती का नया विकल्प: UPSC प्रतिभा सेतु मॉडल से मिलेगा ईमानदार प्रशासन

सुनील दत्त गोयल

राजस्थान में RAS भर्ती को लेकर एक बार फिर खटपट के आरोपों का दौर चल रहा है। पेपर लीक, घोटाले और भ्रष्टाचार के आरोपों ने नौजवानों के सपनों के साथ-साथ जनता का भरोसा भी तोड़ दिया है। अब वक्त आ गया है कि इस पुराने और दागदार सिस्टम को बदल दिया जाए। यह एक खुला सच है कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा (RAS) जैसी प्रतिष्ठित नौकरियों की चयन प्रक्रिया अपनी साख खो चुकी है। ऐसे में अब समय आ गया है कि राजस्थान सरकार इस व्यवस्था को एक नई दिशा दे - समाधान साफ है: अलग से (RAS) की परीक्षा लेने के बजाय, ळइएण में अपनी काबिलियत साबित कर चुके राजस्थान के होनहार बच्चों को सीधे राज्य की सेवा में लिया जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने "UPSC प्रतिभा सेतु" बनाकर देश के लिए यही रास्ता दिखाया है। जो प्रतिभाशाली छात्र UPSC की कठिन परीक्षा पास करके अच्छी रैंक लाते हैं, लेकिन सीमित सीटों की वजह से IAS-IPS - में जगह नहीं पाते, वे राष्ट्र सेवा का मौका पा सकें।

क्यों पुराना RAS भर्ती सिस्टम समाप्त किया जाना चाहिए : राज्य में हर कुछ वर्षों में RAS भर्ती घोटालों की खबरें सुर्खियाँ बनती हैं। कभी पेपर लीक, कभी फर्जीवाड़ा, कभी कोर्ट केस - और इसका सबसे बड़ा नुकसान होता है मेहनती व ईमानदार अभ्यर्थियों को। कई युवाओं का जीवन सालों की तैयारी में फँसकर रह जाता है, जबकि उनकी उम्र और अवसर दोनों धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं। अब सवाल है - क्या हमें इस भ्रष्ट, महंगी और अप्रभावी भर्ती प्रणाली को बनाए रखना चाहिए? जबकि हमारे पास पहले से ही एक ऐसी राष्ट्रीय प्रणाली (UPSC) मौजूद है, जो पारदर्शिता, योग्यता और निष्पक्षता का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रस्तावित मॉडल: (UPSC) पास-आउट अभ्यर्थियों को RAS जैसी राज्य सेवाओं में अवसर

प्रस्ताव : राजस्थान सरकार ळइएण सिविल सर्विस परीक्षा में भाग लेने वाले राजस्थान मूल के अभ्यर्थियों को उनके ळइएण फाइनल रैंक के आधार पर राज्य सेवाओं में सीधा अवसर दे सकती है - विशेष रूप से उन उम्मीदवारों को जो ळइएण में चयन से कुछ स्थान नीचे रह गए लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमता साबित कर चुके हैं।

इस नीति के तहत : जो उम्मीदवार UPSC मेन या इंटरव्यू स्टेज तक पहुँच चुके हैं, और जिनकी रैंक कटऑफ से नीचे रह गई है, उन्हें राज्य प्रशासनिक सेवाओं (RAS, RPS, Allied Services आदि) में मेरिट-आधारित डायरेक्ट एंट्री का विकल्प दिया जा सकता है। कुछ लोग कह सकते हैं कि इन उम्मीदवारों को राज्य की प्रशासनिक बारीकियों की जानकारी नहीं होगी। इसका हल आसान है। भर्ती के बाद इन्हें राजस्थान की भाषा, इतिहास, कानून और प्रशासन का विशेष ट्रेनिंग कोर्स करवाया जाए। असली चीज तो दिमाग और ईमानदारी है, जो इनमें पहले से भरी हुई है। राजस्थान की जनता एक भरोसेमंद और योग्य अफसरशाही की हकदार है। UPSC की मेरिट को अपनाकर राज्य सरकार इस समस्या का स्थायी और शानदार हल निकाल सकती है। यह सुधार अब जरूरी हो गया है।

नीति निर्माण के लिए व्यावहारिक दिशा : इस नीति को लागू करते समय कुछ बिंदुओं का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है ताकि यह न तो आरक्षण व्यवस्था से टकराए और न ही किसी संवैधानिक विवाद में उलझे : आरक्षण व्यवस्था यथावत रखी जाए:-

UPSC रैंक-आधारित चयन में उम्मीदवार की श्रेणी (SC, ST, OBC, EWS, General) के अनुसार राज्य की आरक्षण नीति लागू की जा सकती है। जैसे UPSC में रिजर्व कैटेगरी के उम्मीदवारों के लिए कटऑफ अलग होता है, उसी प्रकार राज्य स्तर पर भी मेरिट लिस्ट कैटेगरी-वाइज तैयार की जा सकती है।

राज्य कैडर हेतु मानदंड : केवल राजस्थान मूल के उम्मीदवार या जिनके माता-पिता राजस्थान में स्थायी निवास रखते हों, वही इस योजना के पात्र हों। UPSC रैंकिंग-आधारित पारदर्शी merit database: प्रकाशित फाइनल और इंटरव्यू स्तर की रैंकिंग डेटा को राज्य सरकार आधिकारिक रूप से उपयोग करे। इससे किसी विवाद या पक्षपात की गुंजाइश नहीं रहेगी।

स्वैच्छिक विकल्प (Voluntary Option) : यह स्कीम वैकल्पिक होनी चाहिए - जो अभ्यर्थी चाहें, वे इस अवसर को स्वीकार कर राज्य सेवा में आ सकते हैं; बाकी उम्मीदवार अपने अन्य अवसरों की खोज जारी रख सकते हैं।

भर्ती आयोग के वित्तीय बोझ में कमी : हर भर्ती चक्र में करोड़ों रुपये प्रश्नपत्र छपवाने, परीक्षा केंद्रों, सुरक्षा आदि पर खर्च होते हैं। यह नीति अपनाने से वह धन शिक्षा, प्रशिक्षण और डिजिटल प्रशासन सुधार में लगाया जा सकता है। डबल इंजन सरकार के लिए स्वर्णिम अवसर आज केंद्र और राज्य, दोनों स्तरों पर भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं - जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डबल इंजन की सरकार कहा है। जब दोनों इंजन एक दिशा में समान गति से चलते हैं, तो विकास की रफ्तार दोगुनी होती है। ऐसे में राजस्थान सरकार के पास यह ऐतिहासिक अवसर है कि वह केंद्र सरकार की ळइएण प्रतिभा सेतु पहल को राज्य की RAS भर्ती प्रणाली में लागू कर एक राष्ट्रीय मिसाल कायम करे। यह न केवल राजस्थान को पारदर्शी और योग्यता-आधारित प्रशासनिक भर्ती का मॉडल राज्य बनाएगा, बल्कि पूरे देश में डबल इंजन सरकार की कार्यकुशलता और दूरदर्शिता का उदाहरण भी प्रस्तुत करेगा। यदि राजस्थान इस नीति को अपनाता है, तो यह संदेश जाएगा कि जब केंद्र और राज्य एक सोच के साथ काम करते हैं, तो जनता का भरोसा और प्रशासन की साख - दोनों मज़बूत होती हैं।

संभावित कदम : हर जिले में 'स्टडी सेंटर' खोले जाएँ, जहां अच्छी लाइब्रेरी, इंटरनेट और पढ़ने की जगह हो। पहले से सेवा में बैठे अफसर गरीब छात्रों को मेंटरशिप दें, उनका मार्गदर्शन करें। एक मुफ्त ऑनलाइन एप या वेबसाइट बनाई जाए, जहां कोचिंग के वीडियो और किताबें मुफ्त में मिल सकें।

सफल उम्मीदवारों को मेंटरशिप कार्यक्रम : पिछड़े वर्गों की छात्राओं के लिए विशेष छात्रवृत्ति और परीक्षा शुल्क में छूट इससे न केवल राज्य का नाम राष्ट्रीय सेवा में बढ़ेगा, बल्कि गरीब तबके के होनहार विद्यार्थियों को भी समान अवसर मिलेगा।

सेवा स्थिरता के लिए न्यूनतम कार्यकाल अनिवार्य

इस नीति को लागू करते समय यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ऐसे चयनित अभ्यर्थी, जिन्हें UPSC प्रतिभा सेतु के माध्यम से RAS जैसी राज्य सेवाओं में नियुक्त किया जाए, वे कम-से-कम 5 वर्ष की अनिवार्य सेवा अवधि पूरी करें। इसका उद्देश्य यह है कि अभ्यर्थी केवल अनुभव या ट्रांज़िशन के तौर पर राज्य सेवा में न आएं और कुछ वर्षों बाद किसी अन्य केंद्रीय या निजी सेवा में चले जाएँ। यदि ऐसा हुआ तो राज्य प्रशासनिक ढांचे में बार-बार रिक्तियाँ उत्पन्न होंगी और नीति का मूल उद्देश्य - स्थायी, दक्ष और अनुभवी अधिकारी वर्ग का निर्माण - अधूरा रह जाएगा। इसलिए यह नियम बनाया जाना।

राज्य प्रशासन को मिलेगा श्रेष्ठ मानव संसाधन : UPSC के अभ्यर्थी वर्षों तक देश-स्तरीय प्रतियोगिता में खुद को तैयार करते हैं। उनका ज्ञान, अनुशासन और समर्पण का स्तर सामान्य राज्य परीक्षाओं से कहीं अधिक होता है। यदि ऐसे प्रतिभाशाली युवाओं को राज्य प्रशासन में मौका दिया जाए, तो सरकार को एक उच्च-गुणवत्ता वाला प्रशासनिक ढांचा मिलेगा - जो नीति निर्माण से लेकर क्रियान्वयन तक, अधिक दक्ष और संवेदनशील होगा। यह न केवल प्रशासनिक पारदर्शिता बढ़ाएगा, बल्कि राजस्थान जैसे राज्य में ood governance की एक नई संस्कृति भी स्थापित करेगा।

UPSC प्रतिभा सेतु पहल का संदर्भ : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हाल ही में प्रतिभा सेतु (UPSC Talent Pool) की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य यही है -उन उम्मीदवारों को सरकारी व निजी क्षेत्र में अवसर देना जिन्होंने UPSC के उच्च स्तर तक पहुँचकर भी चयनित नहीं हो पाए। यदि केंद्र सरकार इस मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू कर सकती है, तो राजस्थान इसे राज्य प्रशासनिक मॉडल के रूप में अपनाने वाला पहला राज्य बन सकता है। गरीब और ग्रामीण विद्यार्थियों को विशेष प्रोत्साहन राज्य सरकार को चाहिए कि वह इस योजना के साथ-साथ एक ळइएण प्रोत्साहन योजना भी शुरू करे, जिसके तहत आर्थिक रूप से कमजोर और ग्रामीण विद्यार्थियों को ळइएण की तैयारी के लिए वित्तीय सहयोग, निशुल्क कोचिंग, या छात्रवृत्ति दी जाए।

निष्कर्ष: परिवर्तन का यही समय है । राजस्थान को बार-बार भर्ती घोटालों और प्रशासनिक अस्थिरता का शिकार नहीं बनना चाहिए। यदि सरकार वास्तव में सिस्टम सुधार चाहती है, तो UPSC प्रतिभा-आधारित RAS भर्ती मॉडल को अपनाना एक साहसिक और दूरदर्शी कदम होगा।

इससे: भर्ती घोटालों का अंत होगा, पारदर्शिता और दक्षता बढ़ेगा ।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड
जयपुर, राजस्थान

राशिफल मंगलवार 18 नवम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, स्वाती नक्षत्र बुधवर प्रातः 7:59 तक, आयुष्मान योग प्रातः 8:09 तक, वणिज करण प्रातः 9:13 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा प्रातः 7:13 से रात्रि 8:18 तक है। आज मास शिवरात्रि है। आज त्रयोदशी तिथि में वृद्धि हुई है। आज जयपुर का 298वां स्थापना दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:32 से 10:52 तक, लाभ-अमृत 10:52 से 1:32 तक, शुभ 2:51 से 4:11 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:53, सूर्यास्त 5:31 तक

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक /आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्